Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material (SANSKRIT) For B.A II

Paper- III

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit
R.M.C. SASARAM

Date
14.07.2020

Topic: शुकनासोपदेश के आधार पर राजाओं के चरित्र का वर्णन / विशेषता
(शेष भाग)

राजाओं के चरित्र का वर्णन करते हुए मन्त्री शुकनास कहते हैं कि जिस प्रकार वेश्याओं का घर विट आदि नीच पुरुषों से भरा रहता है उसी प्रकार राजमहल भी धूर्तों द्वारा परिपूर्ण रहते हैं। दूसरों द्वारा सुने गए उनके नाम भी शव-यात्रा में बजने वाले ढोल नगाड़े आदि बाजे भय उत्पन्न करते हैं, जैसे महापातक के कार्यों में प्रवृत्त जन याद किये जाने मात्र से भी उपद्रव करते हैं उसी प्रकार राजाओं के बारे में विचार मात्र करना भी दुर्भवता को उत्पन्न करता है।

अनुदिवसमापूर्यमाणाः पापेनेवाध्मातमूर्तया भवन्ति।
तदवस्थाश्च व्यसनशतशरव्यतामुपगताः वल्मीकतृणाग्रावस्थिताः
जलबिन्दवः इव पतितमात्मानं नावगच्छन्ति।

प्रतिदिन पाप से परिपूर्ण होने पर भी राजा लोग कुप्पे जैसे फूले रहते हैं अर्थात् खुश रहते हैं। बाँबी के ऊपर उगी हुई घास की नोकों पर स्थित जल की बूँदें जिस प्रकार गिरती हुई नहीं मालूम पड़ती है उसी प्रकार वे राजा भी सैकड़ों व्यसनों के शिकार बने हुए, पापकर्म से पतित अपने को नहीं समझ पाते हैं।

अपरे तु स्वार्थनिष्पादनपरैर्धनपिशितग्रासगृध्रैरास्थाननलिनीबकैः द्यूतं विनोद इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगयाश्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्तता शौर्य्यमिति, स्वदारपरित्यागः अव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपरप्रणेयत्वमिति, अजितभृत्यता सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्य-गीत-वाद्य-वेश्याभिसक्तिः रसिकतेति, महापराधानाकर्णनं महानुभावतेति, परिभवसहत्वं क्षमेति, स्वच्छन्दता प्रभुत्वमिति, देवावमाननं महासत्त्वतेति, वन्दिजनख्यातिः यश इति, तरलता उत्साह इति, अविशेषज्ञता अपक्षपातित्वमिति, दोषानपि गुणपक्षमध्यारोपयद्भिरन्तः स्वयमपि विहसद्भिः प्रतारणकुशलैर्धूर्तैरमानुषोचिताभिः स्तुतिभिः प्रतार्यमाणा, वित्तमदमत्तचित्ता निश्चेतनतया तथैवेत्यात्मन्यारोपितालीकाभिमानाः मर्त्यधर्माणोऽपि दिव्यांशावतीर्णमिव सदैवतमिवातिमानुषमात्मानमुत्प्रेक्षमाणाः प्रारब्धदिव्योचितचेष्टानुभावाः सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति।

अन्य राजा लोगों के लिए जुआ खेलना विनोद अथवा मनोरंजन है, परस्त्रीगमन चतुरता है, जानवरों का शिकार करना परिश्रम है, मदिरादि पीना विलास है, प्रमत्तता अथवा उन्माद ही शौर्य है, अपनी पत्नी का परित्याग कर देना ही अनासक्ति है, गुरुवचनों का उल्लंघन कर अन्य के वश में होना है, नौकरों के अधीन होना सुखपूर्वक सेवा है, नाचना, गाना, बजाना तथा वेश्या में अनुरक्ति करना रसिकता है, बड़े से बड़े अपराध पर भी ध्यान न देना महाशयता है। पराजय को सहन कर लेना क्षमा है, स्वेच्छाचारिता स्वामित्व है, देवताओं का तिरस्कार करना महान होना है, बन्दीजनों द्वारा की गई झूठ-मूठ प्रशंसा ही यश है, चंचलता उल्लास है, अविशेषज्ञता निष्पक्षता है,

→

ऐसा समझते हैं। वे दोषों को भी गुण मानने वाले, स्वार्थ प्रीति में लगे हुए, धन रूपी मांस को ग्रहण करने में गीधों के समान पैनी दृष्टि वाले, कमलवन रूपी सभा भवन में बगुलों के समान रहने वाले, स्वयं अपने मन में प्रसन्न रहने वाले, ठगने में चतुर भ्रमर, देव लोक योग्य स्तुतियों से ठगे हुए जैसे, धन मद से मतवाले चित्त वाले, चेतना हीन होने से वैसे ही अपने मन में मिथ्याभिमान आरोपित किये हुए, जन्ममरणादि मनुष्य भाव से युक्त होकर भी मानों दिव्यांश से अवतीर्ण हुये, अलौकिक जैसे मनुष्य मात्र को अतिक्रमणीय मानते हुए, प्रारब्ध रूपी दिव्य चेष्टाओं से महान् बने हुए सभी लोगों के उपहास को प्राप्त होते हैं।

क्रमशः!